अथ पञ्चांगुली कल्पम्

पञ्चाङ्गुली देवी का स्थान अपने हस्त में माना गया है, अत: इसकी उपासना हस्त नक्षत्र से ही आरंभ करनी चाहिये। कार्तिक मास के हस्त नक्षत्र से साधना प्रारंभ कर मार्गशीर्ष के हस्तनक्षत्र तक करें। एक माला प्रतिदिन करें। हवनादि कर कन्या भोजन करायें। जप शुरु करते समय पंचमेवा की दस आहुति अवश्य देवे।

हाथ की पांच अंगुलियों का प्रतीक देवी का चित्र बनाकर पट्टे पर रखें। देवी का स्थान हाथ के मध्य में है। उसके पैर हाथ की मणिबंध रेखा को स्पर्श करते हैं तथा हृदय रेखा के समीप मुखमण्डल है एव देवी का मुकुट मध्यमा अंगुली के प्रथम पौर को स्पर्श कर रही है।

देवी के आठ हाथ हैं दाहिनी ओर आशीर्वाद मुद्रा, रस्सी (पाश) खड्ग एवं तीर है तथा बायीं ओर हाथों में पुस्तक, घण्टा, त्रिशूल एवं धनुष धारण किये हुये है।

॥ प्रथम यन्त्र रचना ॥

यंत्र के बायी ओर - **ॐ ब्राह्मयै नमः, ॐ कामार्यै नमः, ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ संकायै नमः। ॐ कंकाल्यै नमः। ॐ कराल्यै नमः। ॐ कालिन्द्यै नमः। ॐ महाकालिन्द्यै नमः। ॐ चण्डाल्यै नमः। ॐ ज्वालापुष्पै नमः। ॐ कामाक्षायै नमः। ॐ कामाल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ अंबिकायै नमः।**

दाहिनी ओर - **ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ पद्मन्यै नमः। ॐ वैष्णावै नमः। ॐ वैवाण्यै नमः। ॐ यमघण्टायै नमः। ॐ हरसिद्धयै नमः। ॐ परचत्यै नमः। ॐ तोतलायै नमः। ॐ चडचडे नमः। ॐ सर्वत्यै नमः। ॐ पद्मपुत्रे नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ चित्त्यै नमः। ॐ वारण्यै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ जिंभृण्यै नमः।**

ऊपर - **ॐ सूर्यपुत्राय नमः। ॐ संततायै नमः। ॐ कृष्णावरण्यै नमः। ॐ रक्षायै नमः। ॐ अमावस्यै नमः। ॐ श्रीष्ठुण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ चरमण्यै नमः। ॐ कालायै नमः। ॐ कन्यायै नमः। ॐ वागेश्वर्यै नमः। ॐ अग्निहोत्र्यै नमः। ॐ चक्रेश्वर्यै नमः। ॐ चक्रेश्वराय नमः। ॐ कामाक्ष्यै नमः। ॐ विजयायै नमः।**

नीचे - **ॐ ललनायै नमः। ॐ गौर्यायै नमः। ॐ सुमंगलायै नमः। ॐ रोहिण्यै नमः। ॐ कपिल्यै नमः। ॐ सुलकरायै नमः। ॐ कण्डिल्यै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ कुरुकुल्ले नमः। ॐ भैरव्यै नमः। ॐ पद्मावत्यै नमः। ॐ चण्डायै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ नरसिंहे नमः। ॐ हेमकलायै नमः। ॐ प्रेतायै नमः।**

चारों तरफ - **ॐ नमो पंचांगुली पंचांगुली परशरी परशरी माताय मंगल वशीकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउल मध्ये शत्रु मध्ये दीवान मध्ये भूत मध्ये प्रेत मध्ये पिशाच मध्ये झोटि**

Powered By Samyak Infotech Pvt. Ltd.

मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षिणी मध्ये द्वेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई करावे जड़े जड़ावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।

८	७	५९	६०	६१	६२	२	१
१६	१५	५१	५२	५३	५४	१०	९
४१	४२	२२	२१	२०	१९	४७	४८
३३	३४	३०	२९	२८	२७	३९	४०
२५	२६	३८	३७	३६	३५	३१	३२
१७	१८	४६	४५	४४	४३	२३	२४
५६	५५	११	१२	१३	१४	५०	४९
६४	६३	३	४	५	६	५८	५७

पञ्चांगुली पूजन यन्त्र

अथ ध्याननम्

ॐ पंचांगुली महोदेवी श्री सीमन्धर शासने ।
अधिष्ठात्री करस्यासौ शक्तिः श्री त्रिदशेशितुः ॥

॥ द्वितीय यन्त्रः॥

देवी यंत्र के दाहिनी ओर ऊपर -

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं अंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचन्द्राय पादुकाय महावीराय पंचमुखी वीर हनुमते मम शरीरारिष्ट निवारणाय मम शत्रुसैन्यं भञ्जय भञ्जय मम रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।

बीच में -

यं	यं	यं
चं	चं	चं
रां	रां	रां
क्लीं	क्लीं	क्लीं

देवी यंत्र के बाँयी ओर ऊपर-

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः कृष्णवर्णाय अष्टभुजाय पंचांगुलि महारोग हरणाय सर्वशत्रून् मुख स्तंभनाय वैरिकुल दमनाय मम शरीरं रक्ष रक्ष वज्रपिञ्जराय ममानन्दाय मम शत्रुसैन्यं विध्वंसाय चूरय चूरय मारय मारय ॐ क्षीं क्षां नमः स्वाहा।

षट्कोण के बायीं ओर - तथा दायीं ओर

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः पञ्चांगुली परशरी माताय मंगल वशकरणी लोहमय दंडमयी श्री चौसठ कामविहंडणी रणमध्ये राउलमध्ये शत्रुमध्ये दीवानमध्ये भूतमध्ये प्रेतमध्ये पिशाच मध्ये झोटि मध्ये डाकिनी मध्ये शंखिनि मध्ये यक्षणी मध्ये द्रेषिणी मध्ये शोकिनी मध्ये गुणमध्ये गारुडीमध्ये विनारीमध्ये दोषमध्ये दोषाशरणमध्ये दुष्टमध्ये घोरकष्ट मुझ उपरे बुरो जो कोई रावे जडे जडावे तत् चिन्ते चिन्तावे तस माथे श्रीमाता श्रीपंचांगुली देवी तणो वज्रनिर्धार पड़े ॐ ठं ठं स्वाहा।

यन्त्र बनाकर देवी की पूजा करें।

मन्त्र की एक माला कम से कम नित्य करें। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक सुबह मन्त्र पढकर अपने हाथ पर फूंक मारे एवं अपने हाथ में पंचांगुली का ध्यान करते हुये मुंह व सारे शरीर पर घुमावे। इससे भूत भविष्य व वर्तमान का ज्ञान साधक को हो जाता है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ ह्रीं अंजनेयाय वायुपुत्राय महाबलाय सीताशोक निवारणाय श्रीरामचन्द्राय पादुकाय महावीराय पंचमुखी वीर हनुमते मम शरीरारिष्ट निवारणाय मम शत्रुसैन्यं भञय भञय मम रक्ष रक्ष नमः स्वाहा।
ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः कृष्णवर्णाय अष्टभुजाय पंचांगुलि महारोग हरणाय सर्वशत्रून् मुख स्तंभनाय वैरिकुल दमनाय मम शरीरे रक्ष रक्ष वज्रपिञराय ममानन्दाय मम शत्रुसैन्यं विध्वंसाय चूरय चूरय मारय मारय ॐ क्षीं क्षां नमः स्वाहा।
यं यं यं
चं चं चं
शं शं शं
क्लीं क्लीं क्लीं
पञ्चांगुली यन्त्र

॥ अन्य प्रयोग॥

(क) आकर्षण –

ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी 'देवदत्तस्य' आकर्षय आकर्षय नमः स्वाहा।

अष्टगंध से मन्त्र लिखे देवदत्त की जगह व्यक्ति का नाम लिखकर १०८ बार जप करें। प्रयोग शुक्ल पक्ष की अष्टमी से करें। यंत्र को बड़े बांस की भोगली के अंदर डाल देवें। ४१ दिन में आकर्षण होय।

(ख) वशीकरण –

ॐ ह्रीं पंचांगुली देवी अमको अमुकी मम वश्यं श्रं श्रां श्रीं स्वाहा।

इस यंत्र को वश्य वाले व्यक्ति के कपड़े पर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को हिंगुल गौरोचन मूंग के पानी के साथ स्याही बनाकर लिखें। लालचन्दन का धूप जलावें, दीपक जलावें, इस यंत्र को मकान की छत या छप्पर में बांधे १३ दिन तक १०८ बार नित्य जप करें।

(ग) विद्वेषण –

ॐ ह्रीं क्लीं क्षां क्षं फट् स्वाहा।

इस यन्त्र को शत्रु के वस्त्र श्मशान के कोयले से लिखें श्मशान में जाग पंख, उल्लू के पंख से हवन करें। यंत्र को काले कपड़े व पत्थर से बांध कर कुवे में फेंक देवे। ४१ दिन तक १०८ बार मन्त्र जपें, उल्लू के पंख व मास की धूप देवे।

(घ) उच्चाटन–

ॐ ह्रीं पंचांगुली अमुकस्य उच्चाटय उच्चाटय ॐ क्षं क्लीं घे घे स्वाहा।

इस यंत्र को धत्तूरे के रस से लिखें। पृथ्वी पर कोयले से १०८ बार यंत्र लिखें। यंत्र को पृथ्वी में गाड़ें और उस पर अग्नि जलावें तो ७ दिन में उच्चाटन हो जाता है।

इस यंत्र को अमुकस्य की जगह अमुकबाधा लिखे तथा यंत्र विष (शंखिया, नीला थोथा) से लिखें तो प्रेत डाकिनी शाकिनी बाधा दूर होवे।

(ङ) मारण –

ॐ ह्रीं ष्यां ष्यीं ष्यूं ष्यौं ष्यः मम शत्रून मारय मारय पंचांगुली देवी चूसय चूसय निराघात वज्रेन पातय पातय फट् फट् घे घे।

इस यंत्र को श्मशान के कोयले से काले कपड़े पर लिखें। नीचे शत्रु का नाम लिखें। १०८ बार जप करें भैंसा गुगल का धूप करें। रेशमी डोरे से लपेट कर एकांत में गाड़ देवे। मदिरा की धार देवे धूप गुगल जलावें पास में बैठकर १०८ बार जप करें। शत्रु के पांव की धूल भी गुगल के साथ जलावें। कृष्णपक्ष चतुर्दशी के दिन प्रयोग करें तो शत्रु पैरों में आकर गिरे।

यंत्र को निकाल कर दूध में भिगावें। ॐ ह्रीं पंचांगुली रक्ष रक्ष स्वाहा इस मंत्र से धूप करें, १२१ बार जपे तो शत्रु को शांति मिले।

(च) रक्षा मन्त्र –

ॐ ह्रीं श्रीं पंचांगुलि देवी मम शरीर सर्वअरिष्ठान् निवारणाय नमः स्वाहा ठः ठः ।

इस मन्त्र का सवालाख जप करें। धूप देवे तो सर्वकार्य सिद्ध होवे।

अथ कारागृह बन्दी मोक्ष मंत्र प्रयोगः

॥ बन्दी देवी प्रयोग ॥

एकादशाक्षर मन्त्र – **ॐ हिलि हिलि बन्दी देव्यै नमः।**

अष्टादशाक्षर मन्त्र – **ऐं ह्रीं श्रीं बन्दी अमुष्य** (व्यक्ति का नाम) **वन्द्य मोक्षं कुरु कुरु स्वाहा।**

विनियोग – **ॐ अस्य श्री बन्दी मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, वन्दी देवता, भव बन्ध कारागार बन्धन मुक्तये जपे विनियोगः।**

षडङ्गन्यास – **ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुंम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

सतोय पाथोद समान कान्तिं अम्भोज पीयूषकरी हस्ताम् ।
सुराङ्गना सेवित पाद पद्मां भजामि बन्दीं भवबन्ध मुक्तये ॥

॥ यंत्रार्चनम् ॥

षट्कोण अष्टदल भुपूर बनायें। पश्चात् षट्कोणादि प्रत्येक आवरण की पूजा करें।

प्रथमावरणम् -(षट्कोणे)-**ॐ हृदयाय नमः। ॐ हिलि शिरसे स्वाहा। ॐ हिलि शिखायै वषट्। ॐ बन्दी कवचाय हुम्। ॐ देव्यै नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।**

द्वितीयावरणम् - (अष्टदले पूर्वादि क्रमेण)-ॐ काल्यै नमः। ॐ तारायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ कुब्जायै नमः। ॐ शीतलायै नमः। ॐ त्रिपुरायै नमः। ॐ मातृकायै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः।
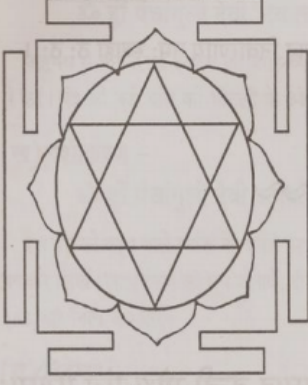
बन्दीदेवी यंत्र

तृतीयावरणम् - (भूपूरे दश दिक्षु) यथा -पूर्वादि क्रमेण - ॐ इन्द्राय नमः। आग्नये नमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। कुबेराय नमः। ईशानाय नमः। ईशान एवं पूर्व मध्ये - ब्रह्मणे नमः। नैर्ऋत्य पश्चिम मध्ये - अनंताय नमः।

चतुर्थावरणम् (भूपुरे - इन्द्रादि लोकपाल समीपे) - ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डायै नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः। ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।

पश्चात् यंत्र मध्य में देवी का पूजन कर जप करें। दो लाख जप कर खीर से दशांश होम करें।

॥ अस्य प्रयोग विधि ॥

मालपूआ पर घी के चतुरस यंत्र बनायें। परन्तु घी से यंत्र बनाना कठिन है घी तो पिघल जायेगा ही अत: पूरा यंत्र मंत्र कल्पना के समान ही बनेगा।

अत: घी मे कलम डुबोकर यंत्र बनायें। अथवा केसर से मालपुये पर यंत्र बनायें उसके चारों ओर अठारह अक्षर का मंत्र लिखकर उसमें देवी का आवाहन करें। पूजा किया हुआ मालपुआ जिस व्यक्ति को बन्दीगृह से छुडाना हो उसे खिलायें। बन्दी व्यक्ति देवी का स्मरण करता हुआ उसे खायें तो कारागृह से शीघ्र छूटे।